भारत में पुरापाषाण काल

भाग-1

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

भारत में 5 लाख से 10,000 BC तक के काल को पुरापाषाण काल कहा जाता है| इस काल में मनुष्य पूर्णतया आखेट पर निर्भर था तथा उनका भोजन मांस अथवा कंदमूल हुआ करता था| इस कालखंड में मानव खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हुए केवल खाद्य पदार्थो का ही उपभोक्ता हुआ करता था| यहाँ तक कि उसका आवास भी पहाड़ों की गुफाओं, वृक्षों आदि पर हुआ करता था|

पुरापाषाण काल एक लम्बी अवधि है, दुसरे इस युग में भी जलवायु परिवर्तन एवं औजार-प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होते रहे| अतः अध्ययन के सुगमता के लिए इस कालखंड को भी तीन भागों में बाँट कर अध्ययन किया जाता है| निम्नपुरापाषाण काल (lower paleolithic), मध्यपुरा पाषाण काल (middle paleolithic) और उच्चपुरा पाषाण काल (upper paleolithic)

निम्न या पूर्व पुरापाषाण काल: 6 लाख BC-1 लाख BC (Lower Paleolithic)

भारत में पाषाण सभ्यता की खोज सर्वप्रथम 1863 में राबर्ट ब्रुश फुट ने चेन्नई के पास स्थित पल्लवरम नामक स्थान पर की| 5 लाख से 50,000 तक के समय को भारत में निम्नपुरापाषाण काल (lower paleolithic) माना जाता है| यह मानव विकास का शुरूआती काल था|

आस्ट्रेलोपिथिकस, होमोहैबिलस तथा होमो इरेक्टस तीनों का संबंध निम्नपुरा पाषाण काल से था| इस काल का अधिकांश हिस्सा हिमकाल के अंतर्गत आता है| इस काल में मानव ने अपने विकास के लिए कोर उपकरणों का निर्माण किया|

उपकरण बनाने में क्वार्टजाइट (Quartzite) जैसे कठोर पत्थरों का प्रयोग किया गया| मानव द्वारा निर्मित इस काल के मुख्य औजार हैण्डएक्स (Hand axe), क्लीवर, चापर तथा चापिंग है| वे हैण्डएक्स का प्रयोग काटने के लिए, क्लीवर का प्रयोग छिलने के लिए करते थे| चापर में एक धार तथा चापिंग में दोनों तरफ धार होता था|

भारत में पहला हैण्ड एक्स पल्लवरम (चेन्नई के पास) से 1863 ई. में राबर्ट ब्रुश फुट ने प्राप्त किया था| इसके कुछ बाद एक और हैण्ड एक्स अतिरपक्कम से भी प्राप्त हुआ| केरल तथा उपरी गंगा घाटी को

छोडकर देश के समस्त हिस्से से निम्नपुरा पाषाण कालीन स्थल प्राप्त हुए है| इस काल के उपकरणों को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है|

चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति: इसके उपकरण सबसे पहले पंजाब की सोहन घाटी, जो कि आधुनिक पाकिस्तान में है, से प्राप्त हुए है इसीलिए इसे सोहन संस्कृति भी कहा जाता है| सोहन संस्कृति में बटिकाश्म उपकरणों की प्रधानता है, जिन्हें साधारणतः गंडासे या खंडक उपकरणों का रूप दिया गया है|

सोहन घाटी में सबसे महत्वपूर्ण अनुसंधान 1935 में डी टेरा के नेतृत्व में एल क्रैम्बिज अभियान दल ने किया| यहां से प्राप्त उपकरणों को आरम्भिक सोहन, उत्तर कालीन सोहन, चौंतरा सोहन नाम दिया गया है|

हैण्डएक्स संस्कृति: इसके उपकरण सर्वप्रथम चेन्नई के समीप बदमदुरै और अतिरपक्कम से प्राप्त किये गए है| यह साधारण पत्थरों से कोर तथा फ्लैक प्रणाली द्वारा निर्मित किये गए है|

भारतीय उपमहाद्वीप में निम्न पुरापाषाण काल (lower paleolithic) के कई स्थल होने के प्रमाण मिले है| इनमे से कुछ मुख्य स्थल निम्नलिखित है.

सोहन घाटी: यह भारत में निम्नपुरापाषाण काल (lower paleolithic) का प्रतिनिधित्व करने वाला महत्वपूर्ण स्थल है| यहां हिमयुग के साक्ष्य मिलते है. सोहन घाटी आधुनिक पाकिस्तान में स्थित है.

बेलनघाटी: यहाँ पुरापाषाण काल भारत में के तीनों चरण निम्न पुरापाषाण काल, मध्य पुरापाषाण कालऔर उच्च पुरापाषाण काल के साक्ष्य मिलते है| बेलनघाटी मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश में स्थित है|

दीदवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्यप्रदेश), पल्लवरम और अतिरपक्क्म (दोनों तमिलनाडु) भी महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल है|